

परमेश्वर का आत्मा

और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अधियारा
था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था (उत्पत्ति 1:2)।

उत्पत्ति 1:2 में कहा गया है कि सृष्टि की रचना के समय *रुआह एलोहीम* अर्थात् “परमेश्वर का आत्मा” पानी के ऊपर मण्डलाता था। आइए परमेश्वरत्व के इस सदस्य के एक हवाले के रूप में *रुआह एलोहीम* शब्दों का अर्थ जानने की कोशिश करते हैं।

रुआह (RUACH) शब्द का अर्थ

संदर्भ के आधार पर *रुआह* शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं। अधिकतर अंग्रेज़ी अनुवादों में उत्पत्ति 1:2 में *रुआह* का अनुवाद “आत्मा” के अर्थ में मिलता है। यह शब्द एक क्रिया से लिया गया है जिसका अर्थ है “सांस लेना।” इसके संज्ञा रूप का अर्थ कई बार “breath” [हिन्दी बाइबल में यहां इसका अनुवाद “जीवन का आत्मा” और “प्राण” मिलता है] (उत्पत्ति 6:17; भजन संहिता 146:4¹), कभी “वायु” (अय्यूब 41:16), कई बार “पवन” (उत्पत्ति 8:1), और कभी “आत्मा” (भजन संहिता 31:5) होता है।

नये यहूदी अनुवाद में मूसा के वाक्यांश *रुआह एलोहीम* के लिए “परमेश्वर की ओर से पवन” के अर्थ में मिलता है। ऐसा इसलिए नहीं कि कभी “आत्मा” शब्द एक गलत अनुवाद है, बल्कि इसलिए है क्योंकि इस अनुवाद के प्रधान सम्पादक हैरी एम. ओरलिंग्सकी के अनुसार यहूदी और अन्य लोग नहीं मानते कि पवित्र आत्मा “पिता और पुत्र के साथ परमेश्वरत्व की एकता” में भागीदार हैं। संपादक का कहना था कि एक “मसीही व्याख्या” होने के कारण “आत्मा” शब्द को निकाल दिया गया था; और इसे इसलिए निकाला गया था क्योंकि “सृष्टि की रचना के बाइबल के वृत्तांत की प्राचीन निकट पूर्वी पृष्ठभूमि पवन” शब्द के उपयोग के पक्ष में है। परन्तु निकटपूर्व की मिथ्या कहानियों के पक्ष में *रुआह एलोहीम* के बाइबल से जुड़े उपयोगों की उपेक्षा करना सही अनुवाद को खोजने के लिए कोई समझदारी की बात नहीं लगता।

उत्पत्ति 1:2 में *रुआह* शब्द के संदर्भ की जांच करने पर पता चलता है कि *रुआह* शब्द *एलोहीम* के साथ जुड़कर “परमेश्वर के *रुआह*” का सही सम्बन्ध बनाता है। यदि इसका अर्थ केवल “पवन” ही था, तो इसके साथ “परमेश्वर का” वाक्यांश क्यों जोड़ा गया? पुराने नियम में *रुआह एलोहीम* के चरानवे हवालों की जांच करने पर, पता चलता है कि उत्पत्ति 1:2 ही ऐसी जगह है जहां “परमेश्वर की वायु” अनुवाद उचित हो सकता था।²

पुराने नियम की दूसरी आयतें (अय्यूब 26:13, KJV; भजन संहिता 104:30) संकेत देती हैं कि परमेश्वर के आत्मा ने रचनात्मक कार्य से कुछ करना था, जो सही अनुवाद के रूप में “परमेश्वर के आत्मा” की ओर संकेत करता है। इसके अतिरिक्त *रुआह एलोहीम* वाक्यांश के अगले संदर्भ में उत्पत्ति 1:26 संकेत देता है कि अपने रचनात्मक कार्य में परमेश्वर के एक या उससे अधिक सहयोगी थे: “हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार और अपनी समानता में बनाएं।”

क्योंकि उत्पत्ति 1:2 में “पवन या वायु” के रूप में *रुआह* के अनुवाद का बाइबल धर्म शास्त्र में कोई कारण नहीं मिलता, और क्योंकि इसके दोनों ही अर्थ “आत्मा” का स्पष्ट और सामान्य संदर्भ हैं, इसलिए लगता है कि उत्पत्ति 1:2 में *रुआह एलोहीम* का अर्थ “परमेश्वर का आत्मा” ही होना चाहिए। इस प्रकार *रुआह एलोहीम* वाक्यांश को परमेश्वर की व्याख्या माना जा सकता है।

“परमेश्वर का आत्मा” का महत्व

ईश्वर के व्याख्यात्मक वाक्यांश के रूप में “परमेश्वर का आत्मा” के कम से कम छह महत्वपूर्ण अर्थ हैं।

1. *परमेश्वरत्व* / उत्पत्ति 1:2 में “परमेश्वर का आत्मा” वाक्यांश परमेश्वरत्व के एक से अधिक सदस्य होने की पहली जानकारी है। वास्तव में इस बात को समझाया नहीं जा सकता कि यह कैसे हो सकता है कि तीन “व्यक्ति” होने के बावजूद परमेश्वर एक ही कैसे है, जिनसे वह परमेश्वर बनता है। उसके गुणों का भेद नहीं पाया जा सकता; केवल परमेश्वर का आत्मा ही परमेश्वर की गहरी बातों को जानता है (1 कुरिन्थियों 2:10, 11)। मनुष्यों को उसकी बात कितनी फुसफुसाहट की तरह सुनाई देती है (अय्यूब 26:14)!

मनुष्य को परमेश्वर के आत्मा के बारे में जो भी ज्ञान है उसका बड़ा महत्व है। यद्यपि वह हर जगह है, परन्तु फिर भी वह एक व्यक्ति ही है। उसमें समझ है। उसमें दिमाग है (रोमियों 8:27); वह सुनता और बोलता है (यूहन्ना 16:13) गहराई से महसूस करता है (इफिसियों 4:30)। आत्मा मसीही लोगों के जीवनो में रहता है (गलातियों 4:6), और स्वर्ग में वह उनके लिए प्रार्थना करता है (रोमियों 8:26, 27), वह पापियों को परमेश्वर की संतान होने के लिए बुलाता है (प्रकाशितवाक्य 22:17)।

2. *ईश्वर का स्वभाव*। “परमेश्वर का आत्मा” वाक्यांश ईश्वर के स्वभाव को ही दर्शाता है अर्थात् यह कि वह एक आत्मिक जीव है (यूहन्ना 4:24) न कि मांस और हड्डियां (लूका 24:39), न मांस और लहू (1 कुरिन्थियों 15:50)। आत्मा होने के कारण, वह मनुष्य की आंखों को दिखाई नहीं देता है (कुलुस्सियों 1:15)।

क्योंकि आत्मा के मांस और हड्डियां नहीं होते इसलिए स्पष्ट है कि इस भाषा में परमेश्वर की नसें, मुंह, पीठ, पांव, भुजाएं, कान, आंख, पलकें और पंख (निर्गमन 15:8; 33:23; 24:10; व्यवस्थाविवरण 33:27; यशायाह 59:1, 2; भजन संहिता 11:4; 91:4) केवल सांकेतिक अर्थ में ही समझे जा सकते हैं। दुख की बात यह है कि धार्मिक शिक्षक परमेश्वर

के स्वभाव में इतनी गलती कर सकते हैं कि उसे यह लिखते हैं कि “मनुष्य की तरह ही उसके दिखाई देने वाले मांस और हड्डियां” हैं।¹

3. *दिखाई देने और अदृश्य।* “परमेश्वर का आत्मा” वाक्यांश का उपयोग स्पष्ट करता है कि किसी मनुष्य ने परमेश्वर को कभी देखा क्यों नहीं, और कोई मनुष्य उसे क्यों नहीं देख सकता (निर्गमन 33:20; यूहन्ना 1:18; 1 तीमुथियुस 6:16)। आत्मा दिखाई नहीं देता (कुलुस्सियों 1:15); इसलिए मानवीय आंखों ने परमेश्वर के सार को कभी नहीं देखा।

परन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है। उसके लिए शारीरिक रूप में अपने आपको दिखाना छोटी सी बात है: अब्राम के डेरे के पास एक मनुष्य के रूप में (उत्पत्ति 18:1), मूसा को आग के रूप में (निर्गमन 3:2), इस्राएलियों को घने बादल के रूप में (निर्गमन 19:9), और एलिय्याह को आवाज के रूप में (1 राजाओं 19:13) मनुष्य के रूप में “इमानुएल” कहलाने वाला बनकर (मत्ती 1:23; यूहन्ना 14:9)। मनुष्य की आंखों ने परमेश्वर के इन तीनों रूपों को तो देखा है, परन्तु वह परमेश्वर के सार अर्थात् *रूआह*, आत्मा को नहीं देख सकता।

4. *नाशवान नहीं।* “परमेश्वर का आत्मा” वाक्यांश का एक और महत्वपूर्ण अर्थ यह है कि ईश्वर अविनाशी है। यदि परमेश्वर मांस और लहू में होता, तो उसने नाशवान होना था; इसलिए वह मर सकता था। क्योंकि उसका स्वभाव आत्मा है इसलिए वह मर नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 15:50)। अविनाशी केवल वही है (1 तीमुथियुस 6:16)।¹

5. *स्थानीय नहीं।* परमेश्वर के आत्मा को स्थानीय अर्थ में नहीं दिया जा सकता। उसके प्रदर्शनों को अंतरिक्ष में देखा जा सकता है और देखा गया है (उत्पत्ति 18:33); परन्तु परमेश्वर के सार को जो कि आत्मा है, एक स्थान पर सीमित नहीं किया जा सकता। कोई भी पहाड़ या मन्दिर, यहां तक कि ऊंचे से ऊंचे आकाश भी उसे समा नहीं सकते (1 राजाओं 8:27)। कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां यह कहा जाए कि परमेश्वर वहां नहीं है (भजन संहिता 139:7-12)।

6. *मनुष्य के स्वभाव की व्याख्या।* “परमेश्वर का आत्मा” शब्द हमें यह समझाने में सहायता करता है कि मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है। यदि परमेश्वर आत्मा है, तो मनुष्यों में उसका स्वरूप भी आत्मा है। हमारी देहें तो हमें अपने माता-पिता से मिली हैं, और अन्ततः ये मिट्टी में मिल जाएंगी; परन्तु हम सब में *रूआह* अर्थात् आत्मा को परमेश्वर ही बनाता है (जकर्याह 12:1)। वह हमारी आत्माओं का पिता है; उसी से हमारी आत्माएं आती हैं, और उसी के पास चली जाती हैं (सभोपदेशक 12:7; इब्रानियों 12:9)। यद्यपि जब तक आत्मा मनुष्य के पास रहती है, उसकी देह महत्वपूर्ण है और पवित्र है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20), परन्तु यह मनुष्य का वास्तविक स्वभाव नहीं है, अर्थात् जिसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया हो।

शरीर से कुछ लाभ नहीं है; जीवन तो परमेश्वर के आत्मा से ही मिलता है (यूहन्ना 6:63)। “भोजन पेट के लिए, और पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनों

को नाश करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिए नहीं, बरन प्रभु के लिए; और प्रभु देह के लिए है” (1 कुरिन्थियों 6:13)। मनुष्य का केवल आत्मा ही जीवित रहता है, उसके उस भाग को परमेश्वर के आत्मा जैसा बनाया गया है।

“परमेश्वर का आत्मा” वाक्यांश हमें ईश्वर के अनिवार्य स्वभाव को दिखाकर परमेश्वर की समझ देने में सहायता करता है। यह समझाता है कि बाइबल कैसे कह सकती है कि परमेश्वर को देखकर भी देखा नहीं गया है। यह तथ्य कि परमेश्वर “आत्मा” है, बताता है कि वह क्यों नहीं मर सकता और उसे स्थायी क्यों नहीं बनाया जा सकता और यह कि मनुष्य का कौन सा भाग परमेश्वर की समानता में बनाया गया है।

परमेश्वर के आत्मा को सृष्टि (उत्पत्ति 1:2; अय्यूब 26:13 भी देखिए; भजन 104:30) और मनुष्य की सृष्टि के भाग के रूप में देखा जाता है (उत्पत्ति 1:2, 26; अय्यूब 33:4)।

पाद टिप्पणियां

¹KJV में भजन संहिता 146:4 में “breath” है। ²उदाहरण के लिए देखिए निर्गमन 31:3; गिनती 24:2; 1 शमूएल 10:10; 2 इतिहास 15:1. “मेरा आत्मा” (उत्पत्ति 6:3) “परमेश्वर का आत्मा” (अय्यूब 27:3) हो सकता था। ³जोसेफ स्मिथ जूनियर, *डॉक्ट्रिन एण्ड कोविनेंट* (साल्ट लेक सिटी: द चर्च ऑफ जीजस क्राइस्ट ऑफ लेटर डे सेंट्स, 1974), 130:22. “एक अर्थ में, पशुओं में *रुआह* होता है (सभोपदेशक 3:21) जिसका सम्भवतः अर्थ “सांस” या “प्राण” परन्तु उनमें अनश्वरता नहीं होती।